

श्री दधिवामनस्तोत्रम्
हेमाद्रिशिखराकारं शुद्धस्फटिकसन्निभम्।
पूर्णचन्द्रनिभं देवं द्विभुजं वामनं स्मरेत् ॥१॥

पद्मासनस्थं देवेशं चन्द्रमण्डलमध्यगम्।
द्वलङ्कालानलप्रख्यं तडित्केकाटिसमप्रभम् ॥२॥

सूर्यकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलम्।
चन्द्रमण्डलमध्यस्थं विष्णुमव्ययमच्युतम् ॥३॥

श्रीवङ्गसकौस्तुभोरङ्गं दिव्यरत्नविभूषितम्।
पीताम्बरमुदारारङ्गं वनमालाविभूषितम् ॥४॥

सुन्दरं पुण्डरीकाङ्गं किरीटेन विराजितम्।
षोडशस्त्रीयुतं संयगन्तरोगणसेवितम् ॥५॥

अङ्ग्यजुस्सामाथर्वाद्वैः गीयमानं जनार्दनम्।
चतुर्मुखाद्वैः देवेशैः स्तोत्राराधनतत्परैः ॥६॥

सनकादैः मुनिगणैः स्तूयमानमहर्निशम।
त्रियंबको महादेवो नृत्यते यस्य जनिधौ॥७॥

दधिमिश्रान्नकवलं रुक्मपात्रं च दक्षिणे।
करे तु चिन्तयेद्वामे पीयूषममलं सूधीः ॥८॥

साधकानाम प्रयच्छन्तुं अन्नपानमनुत्तमम्।
ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय ध्यायेद्देवमधोऽङ्गजम् ॥९॥

अतिसुविमलगात्रं रुक्मपात्रसुमन्म
सुललितदधिभाण्डं पाणिना दक्षिणेन ।
कलशममृतपूर्णं वामहस्ते दधानं
तरति सकलदुःखान वामनं भावयेद्यः ॥१०॥
क्षीरमन्नमन्नदाता लभेदन्नाद एव च।
पुरस्तादन्नमाप्नोति पुनरावर्तिवर्जितम् ॥११॥

आयुरारोग्यमैश्वर्यं लभते चान्नसंपदः।

ইদং স্তোত্রং পঠেদ্যস্তু প্রাতঃকালে দ্বিজোত্তমঃ ॥১২॥

অক্লেশাদন্নসিধ্যর্থং জ্ঞানসিধ্যর্থমেব চ।
অভ্রশ্যামঃ শুদ্ধয়জ্ঞোপবীতী সৎকৌপীনঃ পীতকৃষ্ণাজিনশ্রীঃ
ছত্রী দণ্ডী পুণ্ডরীকায়তাক্ষঃ পায়াদ্বেবো বামনো ব্রহ্মচারী ॥১৩॥

অজিনদণ্ডকমণ্ডলুমেখলারুচিরপাবনবামনমূর্তয়ে।
মিতজগত্ত্রিতয়ায় জিতারয়ে নিগমবাক্ পটবে বটবে নমঃ ॥১৪॥

শ্রীভূমিসহিতং দিব্যং মুক্তামণিবিভূষিতম।
নমামি বামনং বিষ্ণুং ভুক্তিমুক্তিফলপ্রদম ॥১৫॥

বামনো বুদ্ধিদাতা চ দ্রব্যস্হো বামনঃ স্মৃতঃ।
বামনস্তারকোভাভ্যাং বামনায় নমো নমঃ ॥১৬॥